

श्लोक : १

अद्भुत रवद्रुपवाणा यमुनालले नमन

नमामि यमुनामहं सकल सिद्धिहेतुं मुदा
मुरारि पदपङ्कज रङ्गमण्ड रेषुत्कटाम् ।
तटस्थानवसानेन प्रकटमोदपुष्पाम्बुना
सुरासुरसुपूजितस्मरपितुःश्रियं विभ्रतीम् ॥१॥

शब्दार्थ : नमामि = नमन करूं हूं, यमुनामहं = यमुनाम् + अहं = यमुनालले हूं, सकलसिद्धिहेतुं = सर्व सिद्धिजोना हेतुरूप, मुदा = आनंदही, मुरारिपदपङ्कज = कृष्णाना यरभ्रकमण, रङ्गमण्ड = आगारा भारती, अमण्ड = यणकती, रेषु = वालुका (रेती), उत्कटाम् = छवायेली, तटस्था = तट पर (किनारे) रहेलां, नव = नवुं, ज्ञानेन = वन, प्रकटमोद पुष्प = जीलेलां पुष्पोधी सुवासित, अम्बुना = जलवाणा, सुर = देव, असुर = दानव, राक्षस, सुपूजित = सारी रीते पूजायेला, स्मरपितुः = स्मर अटले कामदेव, तेना पिता अटले श्री कृष्ण, श्रियं = शोभा, सुंदरता. विभ्रतीम् = धारभ्र करनारा.

भावार्थ : पुष्टिमार्गनी सर्व सिद्धिजोने आपनारा, गुन दैत्यना अदि (शत्रु) श्री कृष्णना अरुण समगथी ठिकेली तेजस्वी यणकती वालुका (रेती)थी छवायेला, किनारा परना नवा वनमां भीलेलां पुष्पोधी सुवासित बनेला जलवाणा, देव अणे दानवो वडे (दैत्य भाववाणा अणे काम भाववाणा भइतो वडे) सारी रीते पूजायेला अणे स्मरना (कामदेवना) पिता श्री कृष्णअंठनी शोभाणे- अश्वर्यणे धारण करनारा श्री यमुनालले हूं आनंदपूर्वक नमन करूं हूं.

श्री कृष्णना अरुणारविंदनी रज थकी शोभा रहां सिद्धि अलौकिक आपनारां वंदु श्री यमुनाल ले सुपुष्पनी सुवासथी जंगल बहु महेकी रहुं, ले मंड शीतल पवनथी जण पल सुगंधीत थई गयुं पूजे सुरासुर रणेथी वणी सेवता दैवी लवो, वंदन करूं श्री यमुनालले श्री कृष्ण आश्रय आपजो ॥१॥



नमामी यमुनामहंसकलसिद्धिहेतुं मुदा । मुरारिपदपङ्कजरङ्गमण्डरेषुत्कटाम् ॥
तटस्थानवसानेनप्रकटमोदपुष्पाम्बुना । सुरासुरसुपूजितस्मरपितुःश्रियं विभ्रतीम् ॥१॥

समस्त अलौकिक सिद्धियों को देने वाली मुरदेव के शत्रु भगवान श्रीकृष्णचन्द्र के चरण कमल की तेजस्वी और अधिक अर्थात् जल से विशेष रेणु को धारण करने वाली, अपने तट पर स्थित नवीन वन के विकसित सुगन्धित पुष्प मिश्रित जल द्वारा, सुर अर्थात् दैव्यभाव वाले ब्रज भक्तों के और असुर अर्थात् मान भाव वाले ब्रज भक्तों के द्वारा अच्छी प्रकार से पूजित, श्रीकृष्णचन्द्र की शोभा को धारण करने वाली श्री यमुना महाराणीजी को मैं (श्रीवल्लभाचार्य) सहर्षं नमस्कार करता हूँ ॥१॥